<u>शोध-प्रारूप</u>

मुण्डारी साहित्यकार मंगल सिंह मुण्डा जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग,राँची विश्वविद्यालय,राँची से पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूपरेखा

संकाय-जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष-2024

शोध निर्देशक :

डॉ० रामजय नाईक
विभागाध्यक्ष
नागपुरी भाषा विभाग
जे०एन० कॉलेज, धुर्वा, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी :

बैजु मुण्डा
(UGC) NET/JRF
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची।

भूमिका :-

मुण्डारी आग्नेय (Austric) भाषा परिवार की एक महत्वपूर्ण और सशक्त भाषा है, जिसके बोलने वालों की अनुमानित संख्या पूरे भारत के (झारखण्ड, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और असम) में दस लाख के आसपास हैं। मुण्डा आदिवासी इसे अपनी भाषा में 'होड़ो जगर' (मुण्डारी भाषा) कहते हैं। मुण्डारी भाषा परिवार की तीनों भाषाओं में आदमी के लिए अलग- अलग शब्द का प्रयोग किया जाता है। जैसे - मुण्डारी में 'होड़ो', संताली में 'होड़' तथा हो में 'हो' और इन तीनों शब्दों का तात्पर्य व्यक्ति अर्थात् आदमी से है। ये तीनों भाषाएँ मुण्डा भाषा परिवार की भाषाएँ हैं।

प्रजातीय समूह की दृष्टि से मुण्डा आदिवासी प्रोटो-ऑस्ट्रोलॉयड प्रजाति परिवार की एक विशिष्ट जाति है। ये झारखण्ड राज्य के राँची, खूँटी, पलामू, सिमडेगा, हजारीबाग, रामगढ़, पश्चिमी एवं पूर्वी सिंहभूम और गुमला आदि जिलों के विभिन्न गाँवों एवं टोलो/कस्बों में प्रमुख रूप से निवास करते हैं। यह प्रजाति एशिया के दक्षिण- पूर्व एवं ऑस्ट्रेलिया तक विस्तृत रूप से फैली हुई है।

इतिहासकार, पुरातत्ववेत्ता और शारीरिक मानव वैज्ञानिक जी०एस० गुहा के मतानुसार ''मुण्डा आदिवासी प्रोटो-ऑस्ट्रोलॉयड

प्रजाति से संबंधित हैं। ये अति प्राचीनकाल से भारत में निवास करती आ रही आदिवासी समुदाय है, जिसके अनगिनत प्रमाण झारखण्ड के अलावे अन्य राज्यों में भी पाये जाते हैं।

मुण्डाओं का जीवन मुख्यतः जल, जंगल और जमीन पर आधारित है। ये सदियों से सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति सजग हैं। झारखण्ड में अधिकतर मुण्डा आदिवासी जंगलों एवं दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों में निवास करते हैं और इनका मुख्य पेशा है - कृषि, पशुपालन एवं आखेट करना।

मुण्डाओं को क्षेत्रीय विविधता के आधार पर निम्न चार वर्गों में विभाजित किया गया है -

1. हसादअः मुण्डा
2. नगुरी मुण्डा
3. केरअः मुण्डा
4. लतर दिशुम मुण्डा/तमाड़िया मुण्डा।

हमारे देश के झारखण्ड की यह धरती अनेक प्राकृतिक खनिज संसाधनों से परिपूर्ण है। यहाँ की धरती में जहाँ प्राकृतिक संसाधनों का अटूट भण्डार उपलब्ध है, वहीं इस प्रदेश में अन्य ऐसे विद्वानों ने जन्म लिया, जिन्होंने अपने कृतित्व से यहाँ की प्राचीन भाषा, संस्कृति, समाज, अध्यात्म और साहित्य के क्षेत्र में अपने योगदान के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों को भी धनधान्य किया है। इसलिए

हम कह सकते हैं कि झारखण्ड की धरती ऐसी रत्नगर्भा भूमि है, जो सभी अवदानों से परिपूर्ण है। इन सभी कारणों से झारखण्ड की अपनी अलग पहचान है।

झारखण्ड की धरती को अनेक वीरों ने अपने खून-पसीने से सींचा है। झारखण्ड के इस स्वर्णिम इतिहास को रचने में अनेक ज्ञात-अज्ञात विभूतियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसी प्रकार अनेक व्यक्तित्व हुए, जिन्होंने झारखण्ड को विकसित एवं समृद्ध करने में अपना अहम योगदान दिया है। झारखण्ड के ऐसे अनेक रचनाकार अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक रचना से झारखण्ड की पहचान को मजबूत कर रहे हैं।

मुण्डाओं की भाषा मुण्डारी है। मुण्डा जनजाति की भाषा मुण्डारी को विकसित एवं इस भाषा साहित्य को समृद्ध करने में मुण्डारी के रचनाकारों, भाषाविदों एवं शिक्षाविदों की महत्ती भूमिका है। इस भाषा साहित्य को विकसित करने में अनेकों कवि, लेखक, साहित्यकार, शिक्षाविद्, बुद्धिजीवी, सामाजिक, राजनीतिक तथा अध्यात्मिक लोगों ने योगदान दिया है और वर्तमान समय में अभी भी अनवरत अपना प्रयास कर रहे हैं।

मुण्डारी भाषा साहित्य को समृद्ध करने में विदेशी विद्वानों एम०जे० सी० व्हीट्ली, डॉ० ए० नोत्तरोत, फा० जॉन बपतिस्त हॉफमैन, डब्लू०जी० आर्चर, जेम्स हेवर्ड आदि ने मुख्य रूप से योगदान दिया है।

मुण्डारी साहित्यकारों में दाउद दयाल सिंह, निरमल सोय, अब्राहम बजराए, जगदीश त्रिगुणायत, भइयाराम मुण्डा, दुलायचन्द्र मुण्डा, काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डे', बुदू बाबु, डॉ० रामदयाल मुण्डा आदि लेखकों का मुण्डारी साहित्य के विकास में विशेष योगदान है। इन्हीं भाषा साहित्य शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों एवं समाजसेवियों में एक प्रमुख नाम मंगल सिंह मुण्डा है। मंगल सिंह मुण्डा विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। मुण्डारी भाषा साहित्य की विधाओं पर इनकी गहरी पकड़ है।

मंगल सिंह मुण्डा का जन्म खूँटी जिला के खूँटी थानान्तर्गत लांदुब पंचायत स्थित मौजा-बिचागुटु के रङरोड (चेतनडीह) गांव में 28.04.1945 ई० को हुआ। इनके पिता राम सिंह मुण्डा हैं। ये अपने बचपन और छात्र जीवन के विषम परिस्थितियों से लड़ते हुए अपनी जीवन में आगे बढ़े और 1976 ई० में द०पू० रेलवे, कलकत्ता से एक रेलवे कर्मचारी के रूप में नौकरी की शुरूआत की। समय के साथ इन्होंने मुण्डारी-हिन्दी भाषा साहित्य में भी अपनी जगह बना ली। अपनी सेवा कार्य के दौरान जीवन की भाग-दौड़ और कार्य की व्यस्तता के बावजूद उन्होंने कई किताबों और उपन्यासों की रचना की, जिनमें छैला संदु (उपन्यास), महुआ के फूल, कॉलेज गेट आदि जैसी पुस्तकें शामिल हैं।

मंगल सिंह मुण्डा के पिता राम सिंह मुण्डा भी एक रसिक साहित्यकार और शिक्षक थे। वे अखाड़ों की नृत्य मंडलियों में नृत्य-गायन करते हुए गीत बना लेने की उनमें विशेष प्रतिभा थी।

साहित्य के जनमानस की उपज को प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण बात है, लेकिन उसकी भाषा की विविधता को व्याकरणिक तथा साहित्यिक स्वरुप प्रदान करना, उससे भी महान कार्य है। मुण्डारी भाषा साहित्य को जिस प्रकार से काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डे' ने अनुशासित करने का बीड़ा उठाया था, ठीक उसी प्रकार से मंगल सिंह मुण्डा ने भी धारा के विपरीत चलकर मुण्डारी साहित्य को समृद्ध करने की पुरजोर कोशिश की है।

मंगल सिंह मुण्डा द्वारा रचित प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. छैला संदु (हिन्दी उपन्यास)
2. महुआ का फूल (हिन्दी कहानी संग्रह)
3. हड़द सुकु (मुण्डारी-हिन्दी कहानी संग्रह)
4. रंगा चौड़ल रेन पुतुल (मुण्डारी उपन्यास)
5. दुरङ को कोरे आद जना? (मुण्डारी-हिन्दी लघुकथा संग्रह)
6. रामरस (मुण्डारी-हिन्दी गीत संकलन)
7. कॉलेज गेट (मुण्डारी हिन्दी नाटक संग्रह)
8. एयांगा माफ ताइंर्जमे (मुण्डारी-हिन्दी कहानी संग्रह)

9. कामिनाला (मुण्डारी-हिन्दी नाटक)

10. चोम्पा (गुच्छा, हिन्दी मुण्डारी लोकगीत)

11. दो बुन्द समन्दर के (लघु उपन्यास हिन्दी)

इनके अतिरिक्त मंगल सिंह मुण्डा की अनेक रचनाएँ छोटी-बड़ी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपीं। मंगल सिंह मुण्डा अपने मुण्डा जनजाति और मुण्डारी भाषा के प्रति अटूट लगाव रखते हैं। ये अपनी मातृभाषा मुण्डारी एवं मुण्डा जनजाति के समग्र विकास और इसे राष्ट्रीय स्तर तक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

<u>प्रेरणा</u> :-

स्नातकोत्तर अध्ययन में इनके द्वारा रचित उपन्यास 'रंगा चौड़ल रेन पुतुल' ने मुझे काफी प्रभावित किया। इस उपन्यास के माध्यम से उनके समाज के प्रति व्यक्त विचारों और भावनाओं से मैं बहुत प्रभावित हुआ। फलतः इनके भाषा, संस्कृति और साहित्य के प्रति अतुल्य योगदान को साहित्य के दर्पण के समक्ष प्रस्तुत करना ही मेरे लिए सबसे बड़ी बात होगी। इस कार्य को करने के लिए मेरे गुरूजनों ने भी मुझे प्रेरित किया।

<u>परिकल्पना</u> :-

किसी भी शोध कार्य क्षेत्र को निश्चित दिशा प्रदान करने में परिकल्पना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मंगल सिंह मुण्डा के द्वारा

लिखित विभिन्न कृतियों से मुण्डारी भाषा साहित्य सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक रूप से समृद्ध हुई है। इस महत्वपूर्ण विषय पर शोध अध्ययन करने के लिए मेरे गुरूजनों ने प्रोत्साहित एवं उचित मार्गदर्शन किया, जिसके फलस्वरुप मेरी कल्पना को शोध करने हेतु आकार प्राप्त हो गया। मुण्डारी साहित्य में ऊँचा दर्जा हासिल करने वाले विशिष्ट साहित्यकार मंगल सिंह मुण्डा की सार्थक गतिविधियों को एकत्रित करके जन-जन को परिचित कराना ही मेरी एकमात्र परिकल्पना है।

<u>उद्देश्य</u> :-

किसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होता, जब तक कि उसकी उपयोगिता समाज एवं देश के लिए न हो। अतः इस शोध-प्रबंध के पूरा होने से निम्नलिखित उद्देश्यों के सिद्ध होने की संभावना है:

1. मुण्डारी भाषा साहित्य का गहन अध्ययन।
2. मुण्डारी भाषा के साहित्यकार मंगल सिंह मुण्डा के जीवन और बहुविध साहित्य पर प्रकाश डालना।
3. मुण्डारी साहित्य के महत्व एवं उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना तथा इसके संकलन, संचयन और मूल्यांकन की दिशाएँ प्रशस्त करना।

4. झारखण्ड के सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य का अवलोकन एवं इसमें मुण्डारी भाषा साहित्य और साहित्यकार का अध्ययन, विश्लेषण एवं प्रकाशन।
5. मुण्डारी भाषा के साहित्यकारों की जीवनवृत्त को साहित्य प्रेमियों के समक्ष प्रस्तुत करना।
6. झारखण्डी जीवन दर्शन में इनके कृतित्व को दर्शाना।
7. मुण्डारी भाषा साहित्य को सुदृढ़ करना।
8. झारखण्ड के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालना।
9. मुण्डारी साहित्य के समाजसेवी मंगल सिंह मुण्डा के जीवन एवं साहित्य के माध्यम से झारखण्डी जनजीवन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाशडालना।
10. मंगल सिंह मुण्डा के वैयक्तिक विशेषताओं, वाचिक विशेषताओं, आंतरिक विशेषताओं, विनम्रता, शालीनता एवं सामाजिक दायित्व भावना जैसी बिन्दुओं की विवेचना, विश्लेषण एवं मूल्यांकन।

<u>महत्व</u> :-

मंगल सिंह मुण्डा की जीवन एवं साहित्य विषयक शोध अध्ययन अनेकों दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस शोध अध्ययन के महत्व को निम्नलिखित रूप में दर्शाया जा सकता है :

1. इस शोध अध्ययन से मुण्डारी भाषा साहित्य की पौराणिक पृष्ठभूमि का प्रकाशन होगा।

2. ऑस्ट्रिक (आग्नेय) भाषा परिवार की भाषाओं में मुण्डारी भाषा के विभिन्न आयामों की जानकारी प्राप्त होगी।
3. मुण्डारी भाषा के साहित्यकारों की संघर्षमय जीवन एवं प्रयासों का सामान्य रूप से मंगल सिंह मुण्डा के संघर्षशील जीवन, साहित्य, सेवा का विशेष रूप से अनेक तथ्य स्पष्ट होंगे।
4. समकालीन मुण्डारी भाषा-भाषियों एवं साहित्यकारों के साहित्य समीक्षा शोध कार्य के लिए आदर्श सिद्ध होगा।
5. अपनी मातृभाषा एवं संस्कृति के प्रति रुझान में बढ़ोतरी होगी एवं नयी जागृति उत्पन्न होगी।
6. अन्य झारखण्डी भाषाओं के शोध हेतु नए साहित्यकारों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।
7. साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र के लिए लाभकारी होगा।
8. भाषा, कला, संस्कृति एवं साहित्य लेखन के क्षेत्र में सक्रिय शिक्षकों, छात्रों, शोधार्थियों के लिए अनेक तथ्यों एवं विचारों की प्रस्तुति होगी, जो कि वर्तमान एवं भावी आदर्शों की अवधारणा एवं रूपरेखा प्रस्तुत करेगा।

<u>शोध विधि</u> :-

प्रस्तावित शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित शोध विधियों का अनुसरण किया जाएगा :

1. अवलोकन विधि
2. साक्षात्कार विधि
3. प्रश्नावली विधि
4. विश्लेषणात्मक विधि
5. तुलनात्मक विधि
6. आलोचनात्मक विधि
7. वर्णनात्मक विधि।

<u>शोध सामग्री</u> :-

1. पेन, कॉपी
2. मोबाईल
3. कंप्यूटर
4. पुस्तकें
5. शोध आलेख
6. विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ
7. आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ
8. टेप रिकॉर्डर, इंटरनेट आदि।

<u>शोध का समाज में प्रभाव</u> :-

प्रस्तुत शोध को पूरा करने तथा प्रकाशित होने से समाज पर इसका क्रांतिकारी प्रभाव पड़ेगा।

1. मंगल सिंह मुण्डा के जीवन एवं साहित्य प्रकाश में आने पर समस्त मुण्डारी भाषा-भाषियों में साहित्य के प्रति सम्मान और जागरूकता की लहर पैदा होगी।
2. मुण्डारी भाषा-साहित्य के अध्ययन करने की रूचि बढ़ेगी।
3. मुण्डारी भाषा-साहित्य के प्रति पाठकों में जागरूकता आएगी।
4. रचनाओं का पाठकों तक पहुँचने के कारण इसकी गुण, गरिमा एवं साहित्य लेखन में रूचि बढ़ेगी।
5. शोध के प्रकाश में आने पर झारखण्ड ही नहीं, अपितु झारखण्ड के बाहर के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं के निकट रचनाकारों को प्रेरणा मिलेगी।

पीएच०डी० शोध प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा :-

शोध का विषय :- "**मुण्डारी साहित्यकार मंगल सिंह मुण्डा जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन**"।

प्रस्तावना :

- शोध की प्रेरणा और उपादेयता
- प्रस्तुत शोध की विषय व्याप्ति
- प्रस्तुत शोध की अध्ययन विधि
- संबंधित पूर्व शोध कार्य की समीक्षा

अध्यायीकरण :

प्रथम अध्याय : **मुण्डाओं का सामान्य परिचय**

1.1 सामाजिक जीवन

1.2 आर्थिक जीवन

1.3 सांस्कृतिक जीवन

1.4 राजनीतिक जीवन

1.5 धार्मिक जीवन

द्वितीय अध्याय : **मंगल सिंह मुण्डा का जीवनवृत्त**

2.1 पारिवारिक पृष्ठभूमि

2.2 जन्म

2.3 बाल्यावस्था

2.4 किशोरावस्था

2.5 युवावस्था

2.6 शिक्षा

2.7 विवाह

2.8 मुण्डारी साहित्य की ओर झुकाव

2.9 सेवा

2.10 उपलब्धियाँ

2.11 संगीत साधक

क. गीतों का विषय पक्ष

ख. गीत और उसके राग

2.12 धार्मिक आचरण

<u>तृतीय अध्याय</u> : मंगल सिंह मुण्डा की आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तिगत विशेषताएँ

3.1 स्वाभिमान एवं निर्भयता

3.2 दृढ़ निश्चयी

3.3 भावुकता

3.4 कर्तव्य परायणता

3.5 विनम्र

<u>चतुर्थ अध्याय</u> : मंगल सिंह मुण्डा की समकालीन परिस्थितियाँ

4.1 प्राकृतिक स्थिति

4.2 राजनीतिक स्थिति

4.3 सामाजिक-आर्थिक स्थिति

4.4 धार्मिक-सांस्कृतिक स्थिति

4.5 साहित्यिक स्थिति

<u>पंचम अध्याय</u> : **मंगल सिंह मुण्डा की साहित्यिक गतिविधियाँ**

5.1 पृष्ठभूमि

5.2 प्रेरणा

5.3 अभिरूचि

5.4 साहित्य लेखन

<u>षष्ठ अध्याय</u> : **मंगल सिंह मुण्डा का रचना संसार**

6.1 पद्य कृतियाँ

क. गीत

ख. कविता

6.2 गद्य कृतियाँ

क. कहानी

ख. उपन्यास

ग. नाटक

घ. लेख

<u>सप्तम अध्याय</u> : **मुण्डारी भाषा साहित्य का विकास एवं मंगल सिंह मुण्डा का योगदान**

निष्कर्ष

<u>परिशिष्ट</u>: आधार ग्रंथों की सूची

संदर्भ ग्रंथों की सूची

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

साक्षात्कार सूची

चित्रावली।

नोट :- प्रस्तावित शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

<u>शोध निर्देशक</u> :

डॉ० रामजय नाईक
विभागाध्यक्ष
नागपुरी भाषा विभाग
जे०एन० कॉलेज, धुर्वा, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

<u>शोधार्थी</u> :

बैजु मुण्डा
(UGC)NET/JRF
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची।

आधार ग्रंथ की सूची :-

1. अली, डॉ० नाफर, नइमुद्दीन मिरदाहा : जीवन एवं साहित्य, 2009ई०।
2. गौंझू,'गिरिराज',गिरिधारी राम,"पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व", पझरा प्रकाशन, नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची, 1990ई० (शोध प्रबन्ध, जुलाई 1968ई०)।
3. तिवारी,डॉ० उमेश नन्द,"प्रफुल्ल कुमार राय :एक मूल्यांकन", 2006 ई०।
4. नाग,शान्ति,"डॉ० रामदयाल मुण्डा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"।
5. मिश्रा,डॉ० अनुपमा,"आचार्य मृत्युंजय नाथ शर्मा : जीवन एवं साहित्य"।
6. 'मुण्डा'मंगल सिंह,'छैला संदु',राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, 2004.
7. 'मुण्डा'मंगल सिंह,'महुआ का फूल',मिनाक्षी प्रकाशन,नई दिल्ली।
8. 'मुण्डा'मंगल सिंह,'हड़द सुकु',झारखण्ड झरोखा,राँची, 2013.
9. 'मुण्डा'मंगल सिंह, 'दुरंङ को कोरे आद जना', झारखण्ड झरोखा,2013.
10. 'मुण्डा'मंगल सिंह,'राम रस',झारखण्ड झरोखा,राँची, 2013.
11. 'मुण्डा'मंगल सिंह,'कामिनाला', झारखण्ड झरोखा, राँची।
12. 'मुण्डा'मंगल सिंह,'रंगा चौड़ल रेन पुतुल', झारखण्ड झरोखा, राँची।
13. 'मुण्डा'मंगल सिंह,'कॉलेज गेट',झारखण्ड झरोखा, राँची, 2015.
14. 'मुण्डा'मंगल सिंह,'एयांगा माफ ताइंर्ज मे',झारखण्ड झरोखा, राँची।
15. 'मुण्डा'चरण,'मुण्डा'करम सिंह,'मुण्डा'मंगल सिंह, 'चोम्पा (गुच्छा)', 2015.
16. 'मुण्डा'मंगल सिंह,'दो बुन्द समंदर के', प्रकाशनाधीन।
17. मुण्डा, लखीन्द्र मुण्डा,"काशीनाथ सिंह मुण्डा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व",शोध प्रबंध,जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय,राँची विश्वविद्यालय,राँची।
18. मुर्मू, दुखिया,'रघुनाथ टुडू : व्यक्तित्व एवं कृतित्व',प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन,चेशायर होम रोड,बरियातु,राँची,झारखण्ड, जनवरी 2011 (प्रथम संस्करण)।
19. साहु, डॉ० सुखदेव,"भुनेश्वर अनुज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व", 1996 ई०।

संदर्भ ग्रंथ की सूची :-

क्रम संख्या	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	‘आर्चर’जॉर्ज विलियम	मुण्डा दुरङ	-	1941
2.	‘उपाध्याय’कृष्णदेव	लोक साहित्य की भूमिका	साहित्य भवन (प्रा०)	2013
3.	‘ओड़ेया’मेनस राम	सिंग बोंगा ओड़ोः एटअः-एटअः बोंगाको	काथलिक प्रेस, राँची	2009
4.	‘ओड़ेया’मेनस राम	मतुराअः कहानि,जिल्द-5	सत्य भारती, राँची	1984
5.	‘काण्डे’काशीनाथ सिंह मुण्डा	गुड़रम	मुण्डारी साहित्य संग्रह एवं प्रकाशन समिति, राँची	1980
6.	‘काण्डे’काशीनाथ सिंह मुण्डा	ससं बा	मुण्डारी साहित्य संग्रह एवं प्रकाशन समिति, राँची	1972
7.	‘केशरी’प्र०वि०	छोटानागपुर का इतिहास (कुछ सूत्र, कुछ संदर्भ)	वि०केरी स्टडी एण्ड रिसर्च सेन्टर, गोस्सनर कॉलेज, राँची	1979
8.	‘केरकेट्टा’निकुदिम	कुदुम	रश्मि प्रेस, राँची	1995

9.	'बड़ायऊद'डॉ० मनसिद्ध	ह़ोड़ोः जगर सइति ओड़ोः सइति ओल ह़रियाको	जेवियर पब्लिकेशन्स, कर्बला टैंक रोड, राँची	2018
10.	'मुण्डा' भैयाराम	दंड़ा जमाकन ह़ोड़ो कह़नी को	बिह़ार सरकार कल्याण विभाग	1961
11.	'मुण्डा' डॉ० रामदयाल	सेलेद (विविधा)	रूम्बुल	1967
12.	'मुण्डा' डॉ० रामदयाल	बा(ह़ा) बोंगा सरहुल मंत्र	रूम्बुल	2017
13.	'मुण्डू'मनमसीह़	कुदुम ओड़ोः सोलको	काथलिक प्रेस, राँची	1979
14.	'मुण्डा'दुलायचन्द्र	बम्बरू	नॉवल्टी आर्ट प्रेस-5,मेन रोड, राँची	1978
15.	'मुण्डा' डॉ० रामदयाल	आदि धरम	राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली	2009
16.	'मुण्डा'दुलायचन्द्र	सुड़ा संगेन	नॉवल्टी आर्ट प्रेस-5,मेन रोड, राँची	1978
17.	'रॉय'शरत चंद्र	द मुण्डा एण्ड देयर कंट्री	-	1912

18.	'हंस'सागु मुण्डा	मुण्डा कोअः इतिहास	वीर भारत तलवार,हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची	1977
19.	'होरो'दउद दयाल सिंह	धर्म दुरङ	-	1968
20.	'हेमरोम'लोरेन्स सिलास	सेरेञ	झारखण्ड प्रेस, राँची	1985
21.	'होफमन'फादर जॉन बपतिस्त	मुण्डारी विश्वकोष,जिल्द-16	काथलिक प्रेस, राँची	1950
22.	'हेमरोम'लोरेन्स सिलास	ओनोङ अर सनङ	झारखण्ड प्रेस, राँची	1985
23.	'त्रिगुणायत'जगदीश	मुण्डा लोककथा	अधीक्षक सचिवालय शाखा, मुद्रणालय, बिहार, राँची	1968
24.	'त्रिगुणायत'जगदीश	सोसो बोंगा	शिक्षक सहयोग भंडार, राँची	1960
25.	'त्रिगुणायत'जगदीश	बांसुरी बज रही है	कल्याण विभाग,बिहार सरकार	1960

पत्र-पत्रिकाओं की सूची :-

	पत्रिका का नाम	प्रकाशक/प्रकाशन
1.	जगर साड़ा	एस०के० बागे
2.	जोहार	स०अ०बी०दि० हँस
3.	बिहान पत्रिका	बुण्डू
4.	नितिर सकम	एस०के० बागे
5.	मरसल	निरल एनेम होरो
6.	संगोम	डॉ० विरेन्द्र कुमार सोय
7.	सनङ	सिलास हेमरोम
8.	आदिवासी	बिहार सरकार, राँची
9.	डहर	छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ
10.	सरना सकम	भइयाराम मुण्डा
11.	सम्पड़ातिङ	स०अ०बी०दि० हँस
12.	सेंड़ा सेतेङ	नवीन मुण्डू
13.	एयोन	राँची
14.	जवा डालि	त्रिमासिक पत्रिका, राँची
15.	बाः गहनालङ	राँची